# बोया पेड बबूल का तो आम कहाँ से पाए

कक्षा में बच्चों को कबीरदास जी के इस दोहे का अर्थ समझा रही थी । क्या वाकई हम इसका अर्थ समझ गए हैं ? यह सोचते हुए घर पहुँची और दिमाग में बात घूमने लगी । आसान शब्दों में कहा जाए तो 'जैसी करनी वैसी भरनी'। जितना आसान अर्थ है , उतना ही गहरा है । आप कहेंगे, इसमे क्या कठिन है ! जैसा पेड है, वैसा फल मिलेगा । बिलकुल यही बात हमारे ज़िंदगी में लागू होती है । हम वही तो कर रहे हैं ! प्रकृति हमें बार–बार इस बात का परिचय कराती है, और हम हैं कि आँखें मूँदकर बैठे हुए हैं । हम देखना नहीं चाहते, समझना नहीं चाहते । व्यक्ति वो ही करता है जो उसे ठीक लगता है । वह सोचता है कि उसे सब पता है । वो ही ज्ञानी है । ज़रा सोचिए , अगर वह इतना ज्ञानी होता तो उसे दुख क्यों होता ? क्यों सुख के पीछे दौडता, भागता नज़र आता है ? अपने स्वार्थ के लिए औरों को क्यों दुखी करता फ़िरता है , और वही दुख उसके हिस्से में आए तो रोता बैठता है ।

उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो अगर छोटे बच्चे को हमने उसके बचपन से यही सिखाया कि तुम किसी के साथ मिलजुलकर मत रहो , अकेले ही खाना खाओ, मिल बाँट के मत खाओ, किसी के दुख सुख में भागीदार मत बनो ऐसी और इसके जैसी हज़ार बातें। तो इसका आगे जाकर क्या परिणाम होगा यह हम सोच भी नहीं सकते । यही नहीं, हम उस बच्चे का जीवन जटिल बनाएँगे । वो बेचारा समझ ही ना पाएगा कि उसे लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए ।

हमारे आसपास देखें तो प्रकृति का यही नियम है । हमने देखा कि जैसा पेड वैसा फल है। प्रकृति के पास बहुत कुछ है जो दोनों हाथों से हम पर लुटाती है । व्यक्ति सिर्फ़ लेना जानता है । वो करता कुछ है और उसे कुछ और की अपेक्षा है । वो यही जानता है कि इस हाथ दे और उस हाथ ले ।

सोचने कि बात यह है कि हमने अपने परिवार , अपने समाज, अपने आप्त–रिश्तेदारों को क्या दिया है और क्या दे सकते हैं । मेरा मतलब किसी उपहार या वस्तुओं से कदापि नहीं है । प्रकृति में जितने भी जीव–जंतु हैं, पशु, पक्षी, और प्राणी हैं क्या इनको कभी हमनें गौर से देखा ? बचपन में हम सबने सीखा कि गाय दूध देती है, मधुमक्खी शहद देती है वगैरह । जी, ये और इनके जैसे कई जीवों से हम कुछ ना कुछ लाभ उठाते आएँ हैं । जो उनके पास है, वो ही तो देंगे ! इस हिसाब से देखा जाए तो हमारे पास क्या है जो हम दे सकते हैं । यहाँ मैं पैसा या संपत्ति की बात नहीं कर रही हूँ । व्यक्ति के गुणों की बात कर रही हूँ ।

हम इंन्सानों के पास एक ऐसा खज़ाना है जो देने से कम नहीं होता और वो है हमारे गुण। फिर वो गुण अच्छे और बुरे भी हो सकते हैं । व्यक्ति के मन में एक गलत धारणा बैठी हुई है कि वो चाहे जैसा भी व्यवहार दूसरों के साथ करे उसे लगता है कि उसका कुछ भी बिगडेगा नहीं । बिलकुल गलत धारणा है । व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम से, इज़्ज़त से पेश आए तो उसे उससे भी बडी इज़्ज़त और प्रेम औरों से मिलेगा । उसकी ज़िंदगी खुशहाल बनेगी ।

कोई व्यक्ति स्वभाव से बहुत ही प्यारा है , औरों के साथ भी बडे प्यार से पेश आता है, गुस्सा नहीं करता , दूसरों के मनोभावों को अच्छी तरह से समझता है । तो ऐसे में उसके साथ लोग नरमी से ही व्यवहार करेंगे, इज़्ज़त से पेश आएँगे, उसे लोगों का प्यार मिलेगा। इसके विपरीत कोई व्यक्ति लोगों के साथ हमेशा अहंभाव से पेश आता है, गुस्से से बात करता है, सामनेवाले का आदर नहीं करता है तो लोगों की नज़रों से गिर जाएगा । लोग उससे बात तो क्या, मिलना–जुलना भी पसंद नहीं करेंगे । ऐसे व्यक्ति अगर दूसरों से प्रेम की अपेक्षा करते हैं तो वो गलत हैं ।

इससे हमें पता चलता है कि जिस व्यक्ति के पास जो गुण/अवगुण हैं, वो व्यक्ति वही गुण/अवगुण दूसरों को देगा । इस बात में कोई दोराय नहीं नहीं है । हमारे पुराणों में, ग्रंथों

में, शास्त्रों में भी इसी बात को समझाया गया है । विपरीत परिस्थितियों में भी लोगों ने अपने अच्छे व्यवहार, अच्छे विचारों का त्याग नहीं किया । कहना गलत नहीं होगा कि जब हम गलत काम करते हैं तो उसका नतीजा गलत ही होगा । हम अच्छे परिणामों की उम्मीद नहीं कर सकते । मनुष्य अपने इन गुणों से ही उसके जीवन में अधोगति को प्राप्त होता है। बोया पेड..... इस कथन को एक और दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है । जैसे कि बबूल में तो काँटे ही काँटे हैं । इसे अगर हमने दूसरों के मार्ग में बोए और यह अपेक्षा करें कि इसके परिणाम मीठे होंगे ( यहाँ आम का अर्थ अच्छे परिणाम के तौर पर ले सकते हैं ) तो हम गलत विचार रखते हैं । एक बार बबूल का पेड लगाने के बाद हम ये अपेक्षा रखें कि यह पेड बडा होते ही इसमें मीठे आम के फल लगेंगे तो हमारा बबूल का पेड लगाना ही गलत है । काँटे बोए हैं तो काँटे पाइए, आम बोए हैं तो आम पाइए । यह बात हमारे हर कर्म में लागू होती है । जिसतरह परीक्षा से पहले मन लगाकर पढने से मिलने वाले अंक अच्छे ही होंगे । ना कि नकल करने से । समय रहते अभ्यास करना उचित होता है । परीक्षा के बाद मिले हुए अंकों को देखकर रोने से कुछ हासिल नहीं होगा । यही सत्य है । सही कोशिश की है तो सही परिणाम होंगे ।

इसलिए बच्चों, जिसका जैसा कर्म वैसा उसका फल मिलता है, इस बात को समझते हुए अपने हर कर्म को अच्छा करने की कोशिश ज़रूर करें । फिर देखिए , हमें ज़िंदगी में किसी से भी, किसी प्रकार की शिकायत नहीं होगी । हमारा भविष्य उज्जवल होगा ।

Dr. Anupama R Kulkarni

Department of HINDI